SHRI FAROOQ AHMAD MIR

Shri Farooq Ahmad Mir is a renowned Kashmiri shawl weaver and a multi weaver.

2. Born on 9th August, 1953 in Srinagar khaiwan area, Shri Mir's forefathers were affiliated with said craft. Being the son of a weaver, he couldn't attend any school at that time. Being the eldest son in the family he was bound to help his brothers and sisters. However, his sons acquired degrees from colleges and universities. The entry of educated youth provided new blood to the dying craft. His sons have also achieved multiple awards in pashmina weaving.

3. Shri Mir made the weaving procedure simple which was previously a little bit difficult. He invented designs with new techniques. He invented Hindi, Urdu and Sanskrit calligraphy in Kani weaving. He achieved his goal. He provided livelihood to countless people directly or indirectly. For his works, the Government of India felicitated him with numerous awards. The State Government also awarded him at different occasions.

4. Shri Mir has received the National Award from Ministry of Textiles (2007), Thakur Ved Ram National Award from Buttico Weavers Cooperative Society (2012), Sant Kabir Award from Ministry of Textiles (2014), Shanta Prasad Award from Craft Council of India (2018) and Prestigious State Award from Jammu and Kashmir Government (2019).

श्री फारूख़ अहमद मीर

श्री फारूख़ अहमद मीर प्रसिद्ध कश्मीरी शॉल बुनकर हैं और वह कई प्रकार की बुनाई करते हैं।

2. 9 अगस्त, 1953 को श्रीनगर के खैवान क्षेत्र में जन्मे, श्री मीर के पूर्वज भी इसी कला से जुड़े थे। बुनकर के बेटे होने के कारण, वे उस समय किसी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके। परिवार में सबसे बड़े बेटे होने के कारण, उन पर अपने भाई–बहनों की सहायता करने का दायित्व था। हालांकि, उनके बेटों ने महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों से डिग्रियाँ प्राप्त कीं। शिक्षित युवाओं के आने से इस कला को नया जीवन मिला। उनके बेटों को भी पश्मीना बुनाई में कई पुरस्कार मिले हैं।

3. श्री मीर ने बुनाई की पहले थोड़ी मुश्किल रही प्रक्रिया को सरल बनाया। उन्होंने नई तकनीकों के साथ डिजाइन का आविष्कार किया। उन्होंने कनी बुनाई में हिंदी, उर्दू और संस्कृत सुलेख का आविष्कार किया। उन्होंने अपना लक्ष्य प्राप्त किया। उन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अनगिनत लोगों को आजीविका प्रदान की। इनके काम के लिए भारत सरकार ने इन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया। राज्य सरकार ने भी इन्हें कई अवसरों पर सम्मानित किया।

4. श्री मीर को वस्त्र मंत्रालय से राष्ट्रीय पुरस्कार (2007), बटिको बुनकर सहकारी समिति से ठाकुर वेद राम राष्ट्रीय पुरस्कार (2012), वस्त्र मंत्रालय से संत कबीर पुरस्कार (2014), भारतीय शिल्प परिषद से शांता प्रसाद पुरस्कार (2018) तथा जम्मू और कश्मीर सरकार से प्रतिष्ठित राज्य पुरस्कार (2019) प्राप्त हुआ है।